आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2700 • उदयपुर, मंगलवार 17 मई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

उदयपुर में देश की पहली कृत्रिम अंग निर्माण इकाई प्रारम्भ

– नारायण सेवा संस्थान में पैरा ऑलम्पियन अर्जुन अवार्डी दीपा मलिका ने किया उद्घाटन

पैरालम्पिक कमेटी ऑफ इण्डिया की अध्यक्ष एवं अर्जुन अवार्डी पैरा ऑलम्पियन दीपा जी मलिक ने दिव्यांगजन से कहा कि वे दिल से डर और निराशा को दूर करें और अत्याधुनिक सहायक उपकरणों की मदद लेकर जीवन को संवारने की पहल करें। वे रविवार को नारायण सेवा संस्थान के लियों का गुड़ा परिसर में अन्तर्राष्ट्रीय रोटरी के सहयोग से दो करोड़ की लागत से स्थापित देश की पहली अत्याधुनिक कृत्रिम अंग निर्माण इकाई का उद्घाटन कर रही थीं। उन्होंने अपने जीवन संघर्ष से रूबरू कराते हुए कहा कि विकलांगता के दंश के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और सार्थक जीवन के लिए सकारात्मक सोच और कड़े परिश्रम के साथ आगे बढ़ी। नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के जीवन को बेहतर बनाने का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि इस इकाई में बनने वाले कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को सामान्य रूप से अपनी दिनचर्या के निर्वाह में सहायक होंगे।

संस्थान संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी 'मानव' ने मुख्य अतिथि दीपा जी मलिक, विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक ज्ञानदेव जी आहूजा व रोटरी क्लब, उदयपुर मेवाड़ के पदाधिकारियों का स्वागत किया। संस्थान अध्यक्ष प्रशान्त जी अग्रवाल ने कहा कि बढ़ती सड़क दुर्घटनाएं चिंता का विषय हैं। इसमें हाथ–पैर खोने वाले ही नही, उनके परिवार भी अत्यंत कष्टदायी जिन्दगी जीने को मजबूर हो जाते हैं । आंकड़ों की बात करें तो देश की कुल आबादी का लगभग 2 प्रतिशत हिस्सा दिव्यांगता का शिकार है, इसमें ज्यादा संख्या कटे हाथ–पैर वालों की है। ऑटोबोक जर्मनी से आयातित मशीनों से इस इकाई में बनने वाले कृत्रिम अंग दिव्यांगजन को निःशुल्क उपलब्ध करवायें जायेंगे जो उनके जीवन को आसान बनायेंगे।

रोटरी क्लब ऑफ उदयपुर–मेवाड़ के संरक्षक हंसराज जी चौधरी ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगजन के जीवन को बेहतर बनाने के पिछले 37 वर्षो से किये जा रहे कार्यों से इम्यूरी ड्यूड हिल्स यूएसए काफी प्रभावित हुआ और उसने इस इकाई में सहयोग के लिए रोटरी क्लब उदयपुर की अनुशंसा को प्राथमिकता के आधार पर स्वीकार किया। इससे संस्थान को देश ही नही विदेशों में भी कृत्रिम अंग लगाने के कार्यों में गति और आसानी होगी। संस्थान के प्रोस्थेटिक एवं ऑर्थोटिक यूनिट हेड मानस रंजन जी साहू ने नव स्थापित सेन्ट्रल फेब्रिकेशन यूनिट की प्रणाली और उपयोगिता की जानकारी दी। उद्घाटन समारोह में रोटरी कल्ब के अध्यक्ष आशीष जी हरकावत, पूर्व प्रांतपाल निर्मल जी सिंघवी, पूर्व अध्यक्ष सुरेश जी जैन, संस्थान सहसंस्थापिका कमला देवी जी अग्रवाल, निदेशक वंदना जी अग्रवाल तथा परियोजना प्रभारी रविश जी कावडिया भी मौजूद थे। संचालन महिम जी जैन ने किया।

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

विशाल नि:शुल्क दिव्यांग जांच,
ऑपरेशन चयन एवं
कृत्रिम अंग (हाथ-पांव) माप शिविर

दिनांक 17 मई, 2022

▪ कैंसर हॉस्पीटल, कैंसर पहाड़िया आमखो, ग्वालियर, म.प्र.

दिनांक 18 मई, 2022

▪ विंध्य भवन बेंकट हॉल, कटंगा टी.वी. टॉवर के पास, जबलपुर

इस दिव्यांग भाग्योदय शिविर में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

स्नेह मिलन समारोह

दिनांक : 22 मई, 2022

स्थान

श्री कृष्णा मन्दिर, से. 3, रेवाड़ी, हरियाणा, सांय 4.00 बजे

पंजाबी समाज सेवा समिति, कबीर नगर, मूल रोड, चन्द्रपुर, सांय 4.00 बजे

सतनामी आश्रम, दाऊ राष्ट्रीय उ.मा.वि. के पास, सिविल लाईन, दुर्ग, सांय 4.30 बजे

इस स्नेह मिलन समारोह में आपश्री सादर आमंत्रित है एवं अपने क्षेत्र में जो दिव्यांग भाई बहन है उन तक अधिक से अधिक सूचना देवें।

पू. कैलाश जी 'मानव'
'सेवक' प्रशान्त भैया

+91 7023509999
+91 2946622222
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

वास्तविक ज्ञान

एक गुरु के आश्रम में कई शिष्य अध्ययन करते थे। हर साल वह परीक्षा लेकर अपने छात्रों को उर्त्तीण करते थे। लेकिन एक बार एक शिष्य को अनुत्तीर्ण घोषित किया। वह आश्रम में ठहर गया। एक दिन गुरुजी ने उससे कहा, 'तुमने न तो शास्त्रीय ज्ञान अर्जित किया, न ही कुछ कठंस्थ किया। आखिर तुम कब तक इस तरह रहोगे?' शिष्य ने विनम्रतापूर्वक कहा, 'मेरा अपराध क्षमा कीजिए। मैं कुछ ज्ञान हासिल न कर सका। लेकिन कोई न कोई तो होना चाहिए जो आपकी वृद्धावस्था में आपकी सेवा कर सके।' गुरु जी यह सुनकर द्रवित हो गए। एक दिन वह शिष्य गुरुजी को स्नान करा रहा था। वह उनकी पीठ मलते हुए अचानक बोला, 'मंदिर तो बड़ा है पर इसमें भगवान कहीं दिखाई नहीं देते ?'

इस पर क्रोधित होकर बोले, 'तू कैसा शिष्य है। मेरे साथ रहकर मेरा अपमान कर रहा है। यहां से निकल जा।' शिष्य पास में ही झोंपड़ी बनाकर रहने लगा। लेकिन बीच–बीच में वह गुरुजी के दर्शन के लिए आ जाता था। एक दिन जब वह दर्शन के लिए आया तब गुरुजी किसी ग्रंथ का पाठ कर रहे थे। एक मक्खी खिड़की के कांच के बाहर का दृश्य देखती हुई कांच से बार–बार अपना सिर टकरा रही थी। शिष्य ने कहा, 'ठहरो और पीछे देखो।' गुरुजी को क्षण भर के लिए गुस्सा तो आया, फिर भी उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। वह सोच में पड़ गए। उन्होंने शिष्य से पूछा, 'तुमने ऐसा क्यों कहा?' शिष्य ने जवाब दिया, 'गुरुदेव यह मक्खी कांच से बाहर जाने के लिए परेशान हो रही है पर यह नहीं जानती कि उसका मार्ग यह नहीं है। उसका मार्ग तो वह है जहाँ से मक्खी आई है।' गुरु चौंक गए। शिष्य ने तो बहुत गूढ़ बात कही थी। उन्होंने उसे गले लगाते हुए कहा, मैं छात्रों को मूल्यांकन मात्र पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर करता था मगर तुम्हें तो जीवन के मूल तत्वों का ज्ञान है जो ज्यादा महत्वपूर्ण है।'

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

आपके आँखों में नीर भर आया। जब भारत और भारत के बाहर से ये हजारों दिव्यांग कोई अपने घुटने के बल आता है। कोई कूल्हों के बल चलकर के आता है। परसों एक बच्चा इन्दौर से आया ऐसे जो ऐड़ी और पंजा नीचे का होता है जो ऊपर थे। ऊपर की अंगुलिया नीचे चली गयी। गांठे पड़ गयी मैंने देखा इसमें दस–दस गांठे, पाँच–पाँच गांठे पड़ गयी। मैंने देखा इसमे दस –दस गांठे, पाँच –पाँच गांठे इधर भी गांठे अरे गांठे जो भगवान ने दे दी। 206 हड़िड्यां दे दी। 17 हजार करोड़–खरब माँसपेशिया दे दी। ये तो भगवान ने दिये।

लेकिन एक गांठे भगवान ने नहीं दी थी। ये गांठे उस डिप्रेशन ने दी जो माता के गर्भ में जहाँ नौं महिने उसको शांति का वातावरण होना चाहिए था। जहाँ उसको सवाया भोजन मिलना चाहिए था। जहाँ रामचरित मानस का सत्संग होना चाहिए था। जहाँ श्रीमद् भागवत् कथा होनी चाहिए थी। जहाँ देवी भागवत् और गीता जी की कथा होनी चाहिए थी। वहाँ चला –चला। वहाँ झगड़े चले, बात के बतंगड़ चले, वहाँ मन मुटाव चला, ये सम्पति मेरी एक पंचायत बैठी। दो बेटे और उनके पिता और दोनो बेटे क्रोधित पिता की तरफ देखकर क्रोधित हो रहे थे। एक बेटे ने 6 महिने तक इस बूढ़े पिता को में अपने पास रख लूंगा। लाओ आधी सम्पति मेरी कंहा है? दूसरे बेटे ने कहा 6 महिने में भी रख लूंगा। पिता ने कहा ये सम्पति मेरी है भले में दान दे दूंगा। हजारों बच्चों के ऑपरेशन करवा दूंगा लेकिन जब तक ये सम्पति मेरी है। मैं दान दूंगा कुछ भी काम करुंगा। मैं धर्म के काम में लगाऊंगा , लेकिन तुम जैसे को, तुम कहते हो पिता को अपने पास रख लेंगे। अरे कहते हैं पिताजी के पास मैं रह जाऊंगा सोच समझकर बोलिये पिताजी के पास में रह जाऊंगा। अब पिताजी बूढ़े हो गये। आप युवा हो गये। आपके शरीर में खून का बल बढ़ गया। आपके मस्तिश्क में खून की गर्मी बढ़ गयी। आपके घमण्ड आ गया। आपको गर्व आ गया अरे पिताजी को कहते हैं मैं इस बूढ़े को रख लूंगा। क्या सम्पति लेनी है सम्पति लेनी है तो प्यार की लो, संस्कारों की लो, रामायण की कथाओं की लो, सम्पति गीता प्रेस गोरखपुर की लो, सम्पति लो प्रेम की लो।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

परोपकार का फल ही साथ जाता है

एक बार गुरुनानक देव जी लाहौर में ठहरे हुए थे। उसी शहर के एक धनी आदमी दुनीचन्द गुरुनानक देव जी के पास आए और बोले– 'मैं इस शहर का सबसे धनवान आदमी हूँ। जो आप कहोगे, मैं करूँगा।'

नानक देव जी ने उनको एक सूई दी और कहा– 'आप इस सूई को मुझे अगले जन्म में, जब हम मिलेंगे, दे देना। उस आदमी ने सूई ले ली। फिर उसे विचार आया कि यह सूई मैं अपने साथ कैसे ले जा सकता हूँ? वह गुरु नानक देव जी से बोले– 'नहीं गुरु जी, मैं यह सूई अपने साथ नही ले जा सकता हूँ। तभी गुरु नानक देव जी बोले– 'भाई! जो धन– दौलत आपने इकट्ठी कर रखी है, इसे गरीब और जरूरतमंदो में बांट दो। भण्डारे लगवाओ, महिला आश्रम, चिकित्साल खुलवाओ। यही तुम्हारे साथ जाएगा।

सम्पादकीय

जीवन को गुजारना भी संभव है तथा जीना भी। गुजारने का आशय है कि जो चल रहा है वह बस घिसटता रहे, जीवन उदासीनता व शिकायतों से भरा रहे। ऐसी स्थिति में भी झिकझिक करके भी जीवन गुजर जाता है। दूसरी ओर यह भाव रहता है कि मानव जीवन जैसी दुर्लभ योनि प्राप्त हुई है तो इस सलीके से जीयें। अपने लिये जीये, ओरों के लिये जीयें। जीवन दोनों दशाओं में व्यतीत हो जाता है पर गुजारने में मायूसी छाई रहती है, दुःखों का रोना चलता रहता है, असंतुष्टि का राग हर पल अलापा जाता है। जबकि जीने की तमन्ना व्यक्ति की सोच में बदलाव ला देती है। वह जीवन में संतुष्ट तो होता ही पर जीवन को शृंगारित करने के हर अवसर को खोज लेता है। वह अभाव को भी उत्सव में परिवर्तित कर देता है। ऐसी जीवन ही समाज व देश में योगदान करता है।

कुछ काव्यमय

भारी मन से जीना
इसे जीवन कैसे कहें ?
वे भूल जाते हैं कि
दुनिया में कैसे रहें ?
जीना तो आनन्द का उद्‌भव
और संतोष की खान है।
ऐसे जीवन के लिए ही
ईश्वर ने रचे इंसान है।

अपनों से अपनी बात

व्यक्तिगत व सार्वजनिक

भगवान महावीर ने श्रावक के लिए आचार–संहिता दी। उसका एक व्रत है–भोगोपभोग व्रत। इसका अर्थ है, भोग की सीमा करना। संपत्ति कितनी ही हो सकती है, पर वैयक्तिक भोग की सीमा वांछनीय है। विश्व के धनाढ्य व्यक्ति रोकफेलर की बेटी लंदन गई। वह बाजार में कुछ खरीदना चाहती थी। अनेक फोटोग्राफर साथ में हो गए। वह एक जूते की दुकान पर गई। चप्पल देखे। उनका मूल्य अधिक था। उसने कहा–मैं खरीद नहीं सकती, मूल्य अधिक है। पत्रकार साथ में था। उसने

पूछा–'आप तो अरबपति की लाड़ली हैं, फिर पैसे की बात क्यों करती हैं? रोकफेलर का संस्थान लाखों–करोड़ों का दान करता है। इस स्थिति में आपकी बात समझ में नहीं आती।' वह बोली–मैं एक अरबपति की लड़की हूं। व्यापार में करोड़ों रुपये लग सकते हैं, पर हमारा व्यक्तिगत बजट बहुत कम है। हम अपने व्यक्तिगत उपभोग के लिए अधिक खर्च नहीं कर सकते।'

इस घटना के संदर्भ में मुझे भगवान् महावीर के द्वारा निर्धारित श्रावक आचार–संहिता के एक व्रत की स्मृति होती है। व्रत है भोग–उपभोग की सीमा। भगवान् महावीर का अनन्य श्रावक था आनन्द, करोड़ों का स्वामी। अपार संपदा, विस्तृत व्यवसाय, कुटुम्ब का अधिपति। पर उसका व्यक्तिगत जीवन अत्यंत सीधा और सादगीपूर्ण था। स्वयं के रहन–सहन और खान–पान पर बहुत सीमित व्यय होता था।

– कैलाश 'मानव'

जो ए.टी.एम. मशीन पैसा नहीं दे, उसमें अपना पैसा कौन डालेगा ?

सेठ राम किशोर जी के पास धन एवं रुपये पैसे का अकूत खजाना था। रुपया इतना कि रखने तक की घर में जगह नहीं। सेठ जी ने सारा रुपया बैंक में डलवा दिया और अपने नाम का ए.टी.एम. कार्ड बनवा दिया। अब सेठ जी निश्चिंत कि उनका पैसा सुरक्षित जगह पर पहुँच चुका था। न कोई रुपया गुम हो जाने का डर और न रकम डूबने का भय। सेठ जी आराम का चिन्तामुक्त जीवन जीने लग गये। जब सेठ जी को जरूरत होती, अपना ए.टी.एम. कार्ड लिया और रुपया निकला लेते। धीरे–धीरे अवस्था बदलती गई। सेठ जी वृद्ध हो चुके थे। अब सेठ जी कभी चैक भिजवा कर पैसा निकलवाते तो कभी अपने मुनीम को अपना कार्ड देकर भेजते। मुनीम पैसा ले आता। सेठ जी कभी अपने भाई, अपने लड़कों, अपनी लड़कियों, अपने दामाद, अपने रिश्तेदारों में से कोई भी मिलता, उससे पैसा निकलवाकर मंगवा लेते काम बड़ा आराम से चल रहा था।

एक बार सेठ जी ने अपने मुनीम को ए.टी.एम. देकर भेजा। मशीन ने पैसा नहीं

निकाला.....फिर अपने लड़के को देकर भेजा, फिर भी मशीन ने पैसा नहीं निकाला.....फिर लड़की, दामाद, पोते, पोती सभी को भेजा लेकिन मशीन का वही का वही हाल। आखिर सेठ जी स्वयं ए.टी.एम. कार्ड लेकर गये पर मशीन से पैसा नहीं निकला। यह खबर एक से दो, दो से चार, चार से दस, बीस, सौ और हजारों लोगों तक हवा की तरह फैल गई, जिन लोगों ने उस बैंक के ए.टी.एम. कार्ड ले रखे थे, वे सभी पहुँच गये बैंक में और देखते ही देखते सभी ने अपने खाते उठा लिये। बैंक बदनाम हो चुका था। अब उस बैंक पर किसी को विश्वास नहीं था।

क्या हम भी ऐसी बैंक तो नहीं बन रहे हैं, जिससे उपभोक्ताओं का विश्वास उठ रहा हो.....

जी हाँ, हम भी एक ए.टी.एम. की मशीन ही हैं, जिसमें परमात्मा ने अपना पैसा रख रखा है, वह कभी ए.टी.एम. देकर असहाय को, कभी गरीब को, कभी बीमार को, कभी निःशक्त को, कभी निराश्रित को कभी भूखे, प्यासे को तो कभी दुर्बल अवस्था लिए उस वृद्धजन को हमारे पास अपना ए.टी.एम. कार्ड देकर भेजता है।

यदि उस समय हम ए.टी.एम. पैसा निकालते हैं तो हम पर परमात्मा का पूरा विश्वास है। वह और भी धन दे सकता है और यदि हमने उसके प्रतिनिधियों को नकारा है उसका चैक बाउन्स किया है तो वह कभी भी अपनी जमा पूंजी निकलवा सकता है। यदि बैंक की साख बढ़ेगी तो जमाकर्त्ताओं का विश्वास बढ़ेगा। आइए, उस जमाकर्त्ता को राजी रखने का पूरा प्रयास करें, बैंक की ए.टी.एम. पैसा देती रहेगी तो जमाकर्त्ताओं का विश्वास भी बढ़ता रहेगा।

जमाकर्त्ता किसके नाम का चैक बनाये यह उसके अधिकार की बात है, किसी बैंक या ए.टी.एम. मशीन का यह अधिकार नहीं कि जमाकर्त्ता द्वारा भेजे प्रतिनिधि को धन के लिए मना कर दे।

–सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

अब तक पर्याप्त आटा एकत्र हो चुका था। अगले दिन इनकी रोटियां बनाकर अस्पताल ले जाना था। रात को 12 बजे के लगभग कैलाश उठा व बाकी सबको भी उठाया। उसने एक परात ली। सबसे पहले तो अपने घर से ही 4–5 किलो आटा निकाला और परात में डाला, इसके पश्चात् अन्य घरों से एकत्र किया तीन दिन का आटा भी उसमें डाला। समूचे आटे को छान कर, उसमें थोड़ा सा नमक मिलाया व कपड़े से ढक कर एक तरफ रख दिया। पानी की बाल्टी भी उसके पास रख दी। कमला को बोला कि सुबह 4 बजे उठकर इनके फुलके तथा कढ़ी बना लेंगे। इसके बाद सब सो गये।

सुबह 4 बजे के आसपास कमला ने सबको जगा दिया। कैलाश ने आटा ओसणा व लोये किये, कमला उन्हें बेलकर फुलके सेकने लगी। कल्पना व प्रशान्त भी उठ गये थे, दोनों भी मदद में जुट गये। इस बीच आस–पड़ौस के लोग भी हाथ बंटाने आ गये। इन्हें रात को ही सुबह जल्दी आने को कह दिया था। सुबह 6 बजे तक 150 के लगभग रोटियां बन गई। कढ़ी अलग से पका ली थी।

रविवार का दिन था, आर.एल.गुप्ता के पास भी साईकिल थी। कढ़ी की देगची तो एक साईकिल के आगे बांध दी तथा दो पीपों में रोटियां भर कर दोनों साईकिलों के पीछे बांध दिये और निकल पड़े भूखे लोगों की तलाश में। सबसे पहले तो आसपास ही देखा कि कहीं कोई भूखा, वंचित तो नहीं। पास ही गाडोलिया लौहार डेरा डाले थे। इनमें एक अपाहिज और एक अन्धा नजर आया तो उन्हें रोटियां और कढ़ी दे दी। यहां अन्य कोई नजर नहीं आया तो वे आगे बढ़े।

पुराने रेलवे स्टेशन पर एक व्यक्ति चबूतरे पर बैठा नजर आया। उसने पांव नीचे लटका रखे थे और पांवों पर एक अच्छा सा शॉल पड़ा था। कैलाश को चेहरे से तो यह व्यक्ति भूखा लगा मगर शॉल देखकर लगा कि यह सम्पन्न होगा। किसी से यह पूछना कि क्या वह भूखा है, बहुत जोखिम भरा कार्य था। भूखा नहीं हो, खाता–पीता हो तो यह पूछना ही उसका अपमान करने जैसा हो जाता है। इस व्यक्ति को देखकर कैलाश को ऐसा ही डर लग रहा था, कहीं डपट कर यह न कह दे कि –भिखारी समझा है क्या?

अंश - 097

आँखों की हमेशा करें हिफाजत

- रात में सोने से पहले तथा सुबह उठने के बाद ठण्डे पानी से अपनी आँखे धोएं तथा पानी के छींटे मारें।
- तेज धूप तथा तेज रोशनी से अपनी आँखों को बचा कर रखें। इसके लिए आप चश्मे का प्रयोग कर सकते है लेकिन ध्यान रहे कि चश्मा अच्छी क्वालिटी का ही होना चाहिए।
- सुबह–सुबह हरी घांस पर नंगे पांव टहलना तथा हरियाली को देखने से भी आंखों की रोशनी को बढ़ाया जा सकता है।
- आंखों से बहुत ज्यादा समय तक लगातार काम न लें। लिखते व पढ़ते समय थोड़े– थोड़े अंतराल बाद आंखों को आराम दें।
- कंप्यूटर पर काम करते समय चश्मा जरूर पहनें। यदि आपको चश्मा न भी लगा हो तो बिना पावर का चश्मा पहनें।
- लगातार टकटकी लगाकर टी.वी. न देखे। थोड़ी–थोड़ी देर बाद इधर–उधर भी देखते रहें। इससे आंखों पर अधिक बोझ नहीं पड़ेगा।
- रात में सोते समय आंखों में गुलाब जल जरूर डालें।
- आंवले तथा विटामिन सी युक्त खाद्य पदार्थो के सेव से भी आंखों की रोशनी को बरकरार रखा जा सकता है।
- आंखों की एक्सरसाइज भी जरूर करें। इसके लिए अपनी आंखों की पलकों को बार–बार झपकाएं। पलकें उतनी जल्दी–जल्छी झपकें कि सामने वाली वस्तु नांचती हुई प्रतीत हो। यह प्रक्रिया पांच से इस बार अपनाएं। इससे आंखों की थकान कम होगी।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

समाधानवादी बनें

एक व्यक्ति की एक आँख की रोशनी खत्म हो गई। ऐसा होने से वह व्यक्ति बड़ा परेशान हुआ। उसका मन किसी काम में नहीं लगता। रात को नींद भी नहीं आती। रोना भी आता रहता था। इस प्रकार स्वस्थ आँख भी दुःखने लगी, जिससे चिंता और ज्यादा बढ़ गई कि अब मेरी यह आँख भी चली जाएगी।

डॉक्टर को दिखाने पर डॉक्टर ने कहा कि तुम्हारी यह आँख एकदम स्वस्थ है। तुम्हारे व्यर्थ के विचार इस स्वस्थ आँख को भी खराब कर देंगे। अतः तुम इस बात को छोड़ो। दो दिन आँख को विश्राम दो और यह दवा डालो, जिससे यह आँख दुःखनी बंद हो जाएगी। एक आँख चली गई, उसके विषय में विचार मत करो अपितु एक आँख स्वस्थ है, उसे स्वस्थ ही रखना है। इस विषय में विचार करो और उसका ध्यान रखो। इस प्रकार हम समस्या पर ज्यादा विचार न करते हुए समाधान पर ज्यादा विचार करें और समाधानवादी बनें, जिससे जिन्दगी जन्नत का रूप संप्राप्त करें।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

घटना ये थी कि बंबई के समाचार पत्र में एक विज्ञापन का पेज आया था। लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में एक ऑर्थोपेडिक्स सर्जन साहब तीन, चार, पांच इंच छोटे पैर को भी बराबर कर देते हैं। चैनराज जी लोढ़ा साहब ने वो विज्ञापन पढा। मुझे फोन किया। कैलाश जी मै लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में डॉक्टर साहब से मिलूंगा। अपने नाडोल, घाणेराव, साण्डेराव, बाली आसपास के कई क्षेत्रों में बहुत विकलांग है।

मैं उनको देखता हूँ तो मेरी आँखों में आँसूं आ जाते हैं। वो घुटनों के बल चलते हैं। नारायण सेवा के शिविर में देखा। एक बच्चा पंद्रह, सोलह वर्ष का, घुटनों के बल चलता हुआ। घुटने में कई छेद, खून बहने लगा। चैनराज जी लोढा,डॉक्टर आर के अग्रवाल साहब ने देखा। तुरन्त दौड़े। नी कैप लाओ, हमने तो पहली बार सुना नी कैप का। क्या होती है? जल्दी से ड्रैसिंग करो, टींचर लाओ। चैनराज जी लोढा साहब को लगा। इन जैसे बच्चों को ले जायें बंबई में। उन डॉक्टर साहब से ऑपरेशन करवायें। और ये बच्चे अपने पैरों पर चलने लग जावें। तो कितना अच्छा रहेगा? एक बडा अध्याय, कोई घटनाक्रम विश्व का एक घटनाक्रम क्यों बोलते है? भारत का घटनाक्रम बोलें, विश्व से भी आये हैं। सत्रह देशों से आये हैं नारायण सेवा में। शुभारम्भ लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स में डॉक्टर साहब से बात की। करीबन सत्ताइस बच्चों का पहले सर्वे किया। साण्डेराव, बाली, नाडोल आसपास के बच्चों को बंबई लेकर गये।

परम पूज्य चैनराज जी लोढ़ा साहब इतने सहृदय कि जब कुछ बच्चों को लोखंडवाला में भेजा, उनसे बातचीत की। प्रतिदिन भोजन उनके घर से भोजन बनवाकर उनके लिए ले जाते थे। ऐसे अनाथ बच्चे दुर्बल, गरीब, असहाय पैसा, घर भी नही है, पैसा तो परम आदरणीय चैन राज जी लोढ़ा साहब ने व्यय किया। परन्तु कुछ ऐसा लगा कि संवेदनाएँ कमजोर पड़ गयी। कहीं किन्हीं ओर की उस प्रसंग को लाना नहीं है।

नकारात्मक सोच, के प्रसंग बातों को मैं लाना नहीं चाहता हूँ। भूला देना चाहिये। कम से कम लिखना तो नहीं चाहिये। इसी भावना के साथ मैं आगे बढता हूँ। लोढ़ा साहब की दया भावना बढ़ती चली गयी। अन्य डॉक्टर शाह साहब को हमने कहा, ऐसे बच्चों के ऑपरेशन करने हैं। हमने सुना है आपने ये किया है। हाँ, छोटे पैर को लंबा करने का, बराबर करना, घुटने के बल चलने वाले के शुभ कार्य भी।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 450 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023